2

परशुराम दल ने एसडीओपी को सौंपा ज्ञापन

5

अनुशासन और संगठनात्मक निष्ठा की मिसाल

6

घुसपैठ से मुक्ति के लिए बंगाल में बदलाव की लहर

RNI-MPBIL/2011/39805 DAVP/134083/25

निष्पक्ष और निर्भीक साप्ताहिक

जगत प्रवाह

वर्ष : 16 अंक : 52 प्रति सोमवार, 4 मई 2026 मूल्य : दो रुपये पृष्ठ : 8

प्रशासनिक लापरवाही की भेंट चढ़ी जिंदगियां

कवर स्टोरी

-विजया पाठक
एडिटर

बरगी क्रूज हादसा

हाल ही में मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले में स्थित बरगी डेम पर एक और क्रूज हादसा घटित हुआ, जिसने पूरे प्रदेश को झकझोर कर रख दिया। यह घटना पर्यटकों की सुरक्षा में भारी चूक को उजागर करती है और यह बताती है कि पर्यटक स्थलों पर सुरक्षा व्यवस्था की मजबूती कितनी महत्वपूर्ण है। इससे पहले भी बरगी डेम में क्रूज की यात्रा के दौरान हादसे हुए हैं। क्रूज पर सवार लोग एक पर्यटन यात्रा पर थे और यह यात्रा एक खुशी का अवसर बननी चाहिए थी, लेकिन कुछ समय बाद यह घटना एक खौफनाक दुर्घटना बन गई। क्रूज के अचानक पलटने के कारण उसमें सवार लोग नदी में गिर गए और लगभग 09 लोगों की जान चली गई। प्रशासन की घोर लापरवाही के चलते आज फिर ऐसा हादसा हो गया। बरगी डेम एक प्रमुख जलाशय है, जो पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। यहां पर अक्सर पर्यटक नाव की सवारी और क्रूज यात्रा करते हैं, लेकिन इस बार जो हुआ, वह एक बड़ा हादसा था। इस हादसे ने यहां के पर्यटन उद्योग और प्रशासन के कार्य प्रणाली पर सवाल खड़े कर दिए हैं। हादसा उस समय हुआ जब क्रूज में सवार लोग एक सामान्य यात्रा पर थे। अचानक, क्रूज का संतुलन बिगड़ गया और वह पलट गया, जिससे सवार लोग पानी में गिर गए। दुर्घटना के समय, क्रूज में करीब 35-40 लोग सवार थे, जिनमें से अधिकांश पर्यटक थे। (शेष पेज 2 पर)

अमृत सरोवर अभियान और छत्तीसगढ़ में जल-संरक्षण की नई चेतना मुख्यमंत्री की कार्यशैली का प्रेरक मॉडल

-विजया पाठक

भारत में जल केवल एक प्राकृतिक संसाधन नहीं, बल्कि जीवन, संस्कृति और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की आत्मा रहा है। बदलते समय में जब जल संकट, अनियमित वर्षा और भूजल स्तर में गिरावट जैसी चुनौतियाँ ग्रामीण भारत के सामने खड़ी हैं, तब "अमृत सरोवर" जैसी योजनाएँ उम्मीद की नई किरण बनकर उभरी हैं। यह अभियान न केवल जल संरक्षण का माध्यम है, बल्कि जनभागीदारी आधारित विकास मॉडल भी प्रस्तुत करता है। इसी व्यापक राष्ट्रीय दृष्टिकोण को छत्तीसगढ़ में प्रभावी रूप से आगे बढ़ाने में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की कार्यशैली उल्लेखनीय रूप से सामने आती है, जो संवेदनशीलता, प्रशासनिक दक्षता और जनकेंद्रित दृष्टिकोण का समन्वय प्रस्तुत करती है। छत्तीसगढ़, जिसे अक्सर "धान का कटोरा" कहा जाता है, एक कृषि प्रधान राज्य है जहाँ जल संसाधनों की उपलब्धता सीधे किसानों की आजीविका से जुड़ी है। ऐसे में अमृत सरोवर अभियान यहाँ केवल तालाब निर्माण कार्यक्रम नहीं रहा, बल्कि ग्रामीण पुनर्जीवन का आधार बनता जा रहा है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने इस अभियान को केवल सरकारी योजना के रूप में नहीं, बल्कि एक जनआंदोलन के रूप में आगे बढ़ाने की दिशा में कार्य किया है। (शेष पेज 2 पर)

विकास, नेतृत्व और संगठन का मज़बूत स्तंभ हैं बृजमोहन अग्रवाल

-विजया पाठक

बृजमोहन अग्रवाल छत्तीसगढ़ के प्रमुख राजनेता हैं, जिन्होंने राज्य की राजनीति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और कई बार मंत्री पद का कार्यभार भी संभाला है। वर्तमान में वह सांसद हैं, लेकिन सांसद की बजाए उनको प्रदेश सरकार का हिस्सा बनाकर प्रदेश के विकास में अधिक योगदान लिया जा सकता है। जिसके कई कारण हैं जैसे- बृजमोहन अग्रवाल ने अपनी पूरी राजनीति प्रदेश स्तर पर ही की है। उन्होंने प्रदेश में बीजेपी की सरकार बनाने में कई बार अहम रोल अदा किया है। डॉ. रमन सिंह की सरकार में अहम मंत्रालय संभालकर प्रदेश को नई उचाईयों तक पहुंचाया। पर्यटन के क्षेत्र में उनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता है। प्रदेश के ऐतिहासिक राजिम कुंभ के सफल आयोजन में उनका ही विशेष योगदान रहा है। इसे 2005 में भव्य रूप से शुरू किया गया था। आज भी उसी परंपरा में हर वर्ष राजिम कुंभ आयोजित हो रहा है। निश्चित तौर पर बृजमोहन अग्रवाल जैसे दूरदृष्टि वाले नेता को प्रादेशिक स्तर की राजनीति से दूर नहीं रखा जा सकता है। यदि ऐसे नेता प्रदेश सरकार का हिस्सा नहीं होते हैं तो कहीं न कहीं इसका असर अकसर देखने को मिलता है। बृजमोहन अग्रवाल का छत्तीसगढ़ के विकास में योगदान महत्वपूर्ण रहा है। (शेष पेज 3 पर)

तुलाई में देरी से किसानों को बाजार में बेचना पड़ा गेंहू, कमलनाथ सरकार में समय पर हुई थी गेंहू की तुलाई

-विजया पाठक

मध्यप्रदेश, जिसे 'अन्न का कटोरा' भी कहा जाता है, भारत के प्रमुख गेहूं उत्पादक राज्यों में से एक है। यह राज्य हर साल बड़े पैमाने पर गेहूं की उत्पादन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो देश की खाद्य सुरक्षा में योगदान करता है। लेकिन, गेहूं तुलाई के मामलों में सरकारी नीतियों और प्रक्रियाओं को लेकर कई सवाल उठते रहते हैं। खासतौर पर, किसान अपनी उपज का उचित मूल्य नहीं पा पाते और कई बार तुलाई के लिए प्रक्रियाएं जटिल और समय बाध्य होती हैं। मध्य प्रदेश की भाजपा सरकार ने इस बार किसानों के खिलाफ ऐसा चक्रव्यूह रचा है कि किसान आसानी से एमएसपी पर गेहूं बेच ही न पाएं। भाजपा सरकार ने पहले तो बारदाने की कमी का बहाना बनाकर गेहूं खरीद की प्रक्रिया को करीब एक महीना पीछे खिसका दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि छोटे किसानों को औने-पौने दाम पर बिचौलियों को गेंहू बेचने को मजबूर होना पड़ा। जब गेंहू खरीद प्रक्रिया शुरू हुई तो छोटे किसानों की स्लॉट बुकिंग को सैटेलाइट सर्वे का बहाना बनाकर अस्वीकृत कर दिया। किसान समझ ही नहीं पा रहा है कि उसके खेत में जो फसल खड़ी है, वह सैटेलाइट से अस्वीकृत क्यों हो रही है। इसके बाद किसानों को लगातार स्लॉट बुकिंग में समस्या का सामना करना पड़ रहा है। छोटे किसानों को इस चक्रव्यूह में फंसाने के बाद सरकार मझोले और बड़े किसानों के खिलाफ नया कुचक्र लेकर आई और यह व्यवस्था कर दी कि पहले 5 एकड़ से कम के किसानों का गेंहू खरीदा जाएगा, उसके बाद दूसरे किसानों का गेंहू खरीदा जाएगा। (शेष पेज 3 पर)

बरगी क्रूज हादसा; प्रशासनिक लापरवाही की भेंट चढ़ी जिंदगियां

(पेज 1 का शेष)

पानी के तेज बहाव और लापरवाही से कुछ लोग डूब गए और कई गंभीर रूप से घायल हो गए। राहत और बचाव कार्य में काफी समय लगा, लेकिन तब तक कई लोगों की जान चली गई। बरगी क्रूज हादसा अप्रैल 2026 ने यह साबित किया कि पर्यटन स्थलों पर सुरक्षा का कोई विकल्प नहीं हो सकता। यह घटना न केवल एक दर्दनाक हादसा थी, बल्कि एक महत्वपूर्ण सीख भी थी, जो भविष्य में अन्य पर्यटन स्थलों और क्रूज ऑपरेटरों के लिए एक मिसाल बनी। प्रशासन और संबंधित संस्थाओं को अब यह समझना होगा कि पर्यटकों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए, तभी हम इस तरह की घटनाओं को भविष्य में टाल सकते हैं।

हादसे के कारण: इस दुर्घटना के प्रमुख कारणों में सुरक्षा उपायों की कमी और क्रूज संचालन में लापरवाही थी। बताया गया कि क्रूज पर सवार लोग उसकी क्षमता से अधिक थे, जिससे उसका संतुलन बिगड़ गया। इसके अलावा, घटनास्थल पर लाइफ जैकेट्स और अन्य जीवन रक्षक उपकरणों का अभाव था, जो कि एक सामान्य क्रूज यात्रा के लिए अनिवार्य होते हैं। मौसम की स्थिति भी कुछ खराब थी, जिससे पानी के स्तर में उतार-चढ़ाव हो रहा था, और यही कारण क्रूज के पलटने का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू था।

सुरक्षा उपाय और सुधार: इस हादसे के बाद, राज्य सरकार और स्थानीय प्रशासन ने कई महत्वपूर्ण कदम उठाने की योजना बनाई। इनमें क्रूज संचालन में अधिक कड़ी निगरानी, लाइफ जैकेट्स और अन्य बचाव उपकरणों की उपलब्धता, और क्रूज क्षमता के संबंध में नए दिशानिर्देश शामिल थे। इसके साथ ही, क्रूज चालकों को और कर्मचारियों को सुरक्षा प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की गई और यह सुनिश्चित किया गया कि सभी यात्राओं से पहले सुरक्षा जांच अनिवार्य होगी।

क्रूज का अत्यधिक वजन: क्रूज पर ज्यादा लोग सवार थे, जो उसकी क्षमता से अधिक थे। यह अतिरिक्त वजन क्रूज के असंतुलित होने का एक प्रमुख कारण बना।

सुरक्षा उपायों का अभाव: घटनास्थल पर पर्याप्त जीवन रक्षक उपकरण जैसे लाइफ जैकेट्स और बचाव उपकरणों की कमी थी। यदि सुरक्षा उपायों का पालन किया गया होता, तो यह हादसा बहुत हद तक टाला जा सकता था।

अव्यवस्थित संचालन: क्रूज के संचालन में कोई स्पष्ट व्यवस्था और अनुशासन नहीं था। यह यात्रा एक पर्यटक आकर्षण थी, लेकिन सुरक्षा को प्राथमिकता नहीं दी गई थी।

प्रभाव और नुकसान: इस हादसे का प्रभाव न केवल जबलपुर जिले बल्कि पूरे प्रदेश पर पड़ा। यह घटना प्रदेश के प्रशासन के लिए एक कड़ा संकेत थी कि पर्यटकों की सुरक्षा को लेकर अधिक सख्त कदम उठाने की आवश्यकता है। हादसे के बाद कई लोग घायल हुए, और जिनकी मृत्यु हुई, उनके परिवारों पर शोक का पहाड़ टूट पड़ा। साथ ही, यह घटना स्थानीय पर्यटन उद्योग को भी भारी नुकसान पहुंचा।

हालांकि हादसे के तुरंत बाद, जबलपुर के स्थानीय प्रशासन और पुलिस बल ने मिलकर बचाव कार्य शुरू किया। डूबे हुए लोगों को निकालने के लिए पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीमों ने कड़ी मेहनत की। एनडीआरएफ (नेशनल डिजास्टर रेस्पांस फोर्स) और स्थानीय गोताखोरों ने नदी में कूद कर लोगों को बचाने की कोशिश की। राहत कार्य में काफी समय लगा, लेकिन अंततः कई लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला गया। बरगी क्रूज हादसा एक गंभीर और दुर्भाग्यपूर्ण घटना है, जिसने यह साबित कर दिया कि पर्यटन और यात्रा के दौरान सुरक्षा का ध्यान रखना कितना जरूरी है। यह घटना न केवल जबलपुर के लिए एक चेतावनी थी, बल्कि पूरे प्रदेश और देश के लिए एक महत्वपूर्ण सीख भी। हमें यह समझना होगा कि प्रकृति की शक्ति का कोई मुकाबला नहीं कर सकता, लेकिन सुरक्षा उपायों को सही तरीके से लागू करके हम ऐसी घटनाओं को रोका जा सकता है। इस हादसे के बाद, जबलपुर और अन्य पर्यटक स्थलों पर सुरक्षा के उपायों को मजबूत किया गया, और यह सुनिश्चित किया गया कि भविष्य में इस तरह की घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

अमृत सरोवर अभियान और छत्तीसगढ़ में जल-संरक्षण की नई चेतना मुख्यमंत्री की कार्यशैली का प्रेरक मॉडल

(पेज 1 का शेष)

स्वयं इस अभियान से जुड़ने लगे

उनकी कार्यशैली की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे योजनाओं को कागजों तक सीमित नहीं रहने देते, बल्कि उन्हें जमीनी स्तर पर लागू कराने पर विशेष जोर देते हैं। अमृत सरोवर जैसे कार्यक्रमों में उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि ग्राम पंचायतों, स्थानीय समुदायों और प्रशासन के बीच समन्वय मजबूत हो। परिणामस्वरूप, ग्रामीण क्षेत्रों में जल संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ी और लोग स्वयं इस अभियान से जुड़ने लगे। अमृत सरोवर की मूल संकल्पना जल संचयन, पर्यावरण संरक्षण और सामुदायिक भागीदारी को छत्तीसगढ़ में प्रभावी रूप से अपनाया गया है। मुख्यमंत्री साय की नीति यह स्पष्ट करती है कि विकास केवल संरचनात्मक नहीं, बल्कि सामाजिक और पर्यावरणीय संतुलन के साथ होना चाहिए। यही कारण है कि सरोवर निर्माण के साथ-साथ वृक्षारोपण, जल पुनर्भरण और स्थानीय रोजगार को भी प्राथमिकता दी गई।

मुख्यमंत्री की दूरदर्शिता का प्रमाण

छत्तीसगढ़ के कई जिलों में अमृत सरोवरों ने ग्रामीण जीवन को नया स्वरूप दिया है। ये सरोवर अब केवल जल स्रोत नहीं, बल्कि सामाजिक गतिविधियों, कृषि सिंचाई और पर्यावरण संतुलन के केंद्र बन चुके हैं। मनरेगा के माध्यम से स्थानीय लोगों को रोजगार मिला, जिससे आर्थिक सशक्तिकरण भी हुआ। मुख्यमंत्री साय की यह समझ कि विकास योजनाएँ तभी सफल होती हैं जब वे रोजगार और पर्यावरण दोनों को साथ लेकर चलें, उनकी दूरदर्शिता को दर्शाती है। उनकी कार्यशैली में एक और महत्वपूर्ण पहलू है जनभागीदारी पर विश्वास। वे मानते हैं कि कोई भी योजना तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक जनता स्वयं उसका हिस्सा न बने। अमृत सरोवर अभियान में यह स्पष्ट रूप से देखा गया कि ग्राम पंचायतों, युवाओं, महिलाओं और किसानों ने सक्रिय रूप से योगदान दिया। श्रमदान, पौधरोपण और संरक्षण गतिविधियों में लोगों की भागीदारी ने इस योजना को वास्तविक अर्थों में जनआंदोलन बना दिया।

बहुआयामी दृष्टिकोण से देखा

छत्तीसगढ़ के कई ग्रामीण क्षेत्रों में अमृत सरोवर अब केवल जल संरचना नहीं रहे, बल्कि सामाजिक केंद्र बन चुके हैं। यहाँ लोग न केवल जल का उपयोग कर रहे हैं, बल्कि सामुदायिक बैठकों, सांस्कृतिक गतिविधियों और पर्यावरण शिक्षा के लिए भी इनका उपयोग कर रहे हैं। यह परिवर्तन मुख्यमंत्री की उस सोच का परिणाम है जिसमें विकास को बहुआयामी दृष्टिकोण से देखा जाता है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की कार्यशैली में एक और महत्वपूर्ण तत्व है परिणाम आधारित प्रशासन। वे योजनाओं की प्रगति की नियमित समीक्षा करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे। अमृत सरोवर अभियान में भी यही दृष्टिकोण अपनाया गया, जिससे निर्माण कार्यों में गति आई और गुणवत्ता सुनिश्चित हुई।

नारा नहीं नीति का आधार होना चाहिए

जल संरक्षण के इस अभियान ने छत्तीसगढ़ में भूजल स्तर सुधारने, कृषि उत्पादन बढ़ाने और सूखे की समस्या को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। किसानों के लिए यह योजना वरदान साबित हो रही है, क्योंकि अब उन्हें सिंचाई के लिए स्थायी जल स्रोत उपलब्ध हो रहे हैं। मुख्यमंत्री साय का यह स्पष्ट संदेश है कि "जल है तो जीवन है" केवल नारा नहीं, बल्कि नीति का आधार होना चाहिए। उनकी सरकार ने यह भी सुनिश्चित किया है कि जल संरक्षण केवल एक विभागीय जिम्मेदारी न रहे, बल्कि सभी विभागों का साझा दायित्व बने। इसी समन्वित दृष्टिकोण ने अमृत सरोवर अभियान को और प्रभावी बनाया है। पर्यावरण, पंचायत, ग्रामीण विकास और कृषि विभागों के बीच बेहतर तालमेल ने इस योजना को गति दी है।

सतत विकास के लिए सराहनीय निर्णय

भविष्य की दृष्टि से देखें तो अमृत सरोवर छत्तीसगढ़ में केवल जल संरचना नहीं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था के नए मॉडल के रूप में विकसित हो सकते हैं। मत्स्य पालन, पर्यटन और सामुदायिक गतिविधियों के माध्यम से ये सरोवर ग्रामीण आय के नए स्रोत बन सकते हैं। मुख्यमंत्री साय की सोच इसी दिशा में अग्रसर दिखाई देती है कि प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग सतत विकास के लिए किया जाए। कहा जा सकता है कि अमृत सरोवर अभियान केवल एक सरकारी योजना नहीं, बल्कि एक विचार है जल, जीवन और समाज के संतुलन का विचार। छत्तीसगढ़ में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की कार्यशैली ने इस विचार को धरातल पर उतारने का कार्य किया है। उनकी संवेदनशील, जनकेंद्रित और परिणामोन्मुखी नीति ने यह सिद्ध किया है कि जब नेतृत्व में दृष्टि और समर्पण दोनों हों, तो विकास केवल आंकड़ों में नहीं, बल्कि लोगों के जीवन में दिखाई देता है।

किसान हेल्पलाइन पर सीएम यादव ने लगाया फोन, नहीं मिल पाई फसल की जानकारी

-दुर्गेश अरमोती

जगत प्रवाह. भोपाल। मध्य प्रदेश की राजनीति में उस वक्त हलचल मच गई, जब मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने खुद किसान बनकर किसान हेल्पलाइन पर फोन लगा दिया। हालांकि सीएम द्वारा मांगी गई जानकारी उन्हें नहीं मिल पाई। गर्मी की तीसरी फसल को लेकर जानकारी लेने के लिए किए गए इस कॉल का वीडियो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। वीडियो सामने आने के बाद कांग्रेस ने भी सवाल खड़े कर दिए हैं और किसान हेल्पलाइन की तैयारियों पर चर्चा शुरू हो गई है।

एक दिन पहले हुआ था हेल्पलाइन का शुभारंभ

गौरतलब है कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने एक दिन पहले ही किसान हेल्पलाइन का औपचारिक शुभारंभ किया था। शुभारंभ के अगले ही दिन मुख्यमंत्री द्वारा खुद कॉल किए जाने को व्यवस्था की जांच के तौर पर देखा जा रहा है।

कांग्रेस ने उठाए सवाल

वीडियो सामने आने के बाद कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने इसे सोशल मीडिया पर पोस्ट कर सरकार पर सवाल खड़े किए हैं। उनका कहना है कि जब मुख्यमंत्री को ही सही जानकारी नहीं मिल पा रही है, तो आम किसान की समस्या कैसे सुलझेगी।

परशुराम दल ने एसडीओपी को सौंपा ज्ञापन

-प्रमोद बरसले

जगत प्रवाह. टिमरनी। 25 अप्रैल 2026 की दरमियानी रात बदमाशों द्वारा शिव मंदिर छिदगांव मेल से 3 गाय और 2 बछड़े को ले जाकर रेलवे ट्रैक पर बांध दिया गया जिसमें दो गाय गर्भवती थी जिनकी ट्रेन से मौत हो गई। इसकी शिकायत पुलिस थाने को भी की थी परंतु आज तक कोई जानकारी पुलिस ने नहीं दी। एक बार फिर परशुराम दल ने टिमरनी एसडीओपी कार्यालय जाकर एसडीओपी आकांक्षा तलया को ज्ञापन सौंपा। जिसमें प्रदेश सचिव एवं नर्मदापुरम संभाग प्रभारी पं. सतीश चौरे प्रतापपुरा, जिला अध्यक्ष नर्मदा जाग्रति संघ टिमरनी एवं नार्मदीय ब्राह्मण महासभा से अभिषेक काशिव टिमरनी, दुर्गेश तिवारी, शुभम शुक्ला, सोनिया चौरे, लाली शर्मा एवं समस्त परशुराम दल एवं बजरंग दल एवं छिदगांव मेल के ग्रामवासी सम्मिलित रहे।

विकास, नेतृत्व और संगठन का मजबूत स्तंभ हैं बृजमोहन अग्रवाल

(पेज 1 का शेष)

उनकी नीतियों और योजनाओं ने राज्य को विकास की नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया। कृषि, पंचायती राज, राजस्व, स्वास्थ्य और इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे विभिन्न क्षेत्रों में उनके द्वारा किए गए सुधारों ने छत्तीसगढ़ को एक मजबूत और समृद्ध राज्य बनाने में अहम भूमिका निभाई। अग्रवाल ने न केवल राज्य के विकास को गति दी, बल्कि उन्होंने राज्य की जनता के लिए जीवन स्तर में सुधार भी किया। उनके योगदान को हमेशा याद किया जाएगा और उनका प्रभाव छत्तीसगढ़ की राजनीति और विकास में लंबे समय तक महसूस किया जाएगा।

कुशल संगठनकर्ता के रूप में अग्रवाल

बृजमोहन अग्रवाल की सबसे बड़ी विशेषताओं में से एक है उनकी संगठनात्मक क्षमता। वे पार्टी कार्यकर्ताओं और नेताओं के बीच समन्वय स्थापित करने में माहिर माने जाते हैं। राजनीति में अक्सर देखा जाता है कि विभिन्न स्तरों पर मतभेद होते हैं, लेकिन ब्रजमोहन अग्रवाल ने हमेशा इन मतभेदों को संवाद और सहयोग के माध्यम से सुलझाने का प्रयास किया। यही कारण है कि वे संगठन में एक सेतु की भूमिका निभाते हैं। उनकी यह क्षमता केवल पार्टी के अंदर ही नहीं, बल्कि सरकार और जनता के बीच भी दिखाई देती है। वे जनता की समस्याओं को सरकार तक और सरकार की योजनाओं को जनता तक पहुंचाने में प्रभावी भूमिका निभाते हैं। उनकी लोकप्रियता का मुख्य कारण उनका सरल स्वभाव, जनता के प्रति समर्पण और विकास कार्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता है। वे हमेशा अपने क्षेत्र में सक्रिय रहते हैं और लोगों के बीच जाकर उनकी समस्याओं को सुनते हैं। यही कारण है कि जनता उन्हें अपना नेता मानती है, न कि केवल एक राजनेता। इसका कारण केवल उनकी लोकप्रियता नहीं है, बल्कि उनकी प्रशासनिक क्षमता, संगठनात्मक कौशल और व्यापक अनुभव है।

राजनीतिक दृष्टि से बृजमोहन अग्रवाल

उनके राजनीतिक जीवन को लेकर अनेक पहलुओं पर चर्चा की जा सकती है, जैसे उनकी काबिलियत, नेतृत्व क्षमता और राज्य की जनता के प्रति उनकी निष्ठा और सबसे बड़ी खासियत उनकी नेतृत्व क्षमता है। उन्होंने हमेशा अपने कार्यों से साबित किया है कि वे न केवल अच्छे राजनेता हैं, बल्कि जनता के मुद्दों को प्राथमिकता देने वाले नेता भी हैं। उनके द्वारा लागू की गई योजनाओं और पहलों ने राज्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वे किसानों, मजदूरों और सामान्य नागरिकों के लिए एक मजबूत आवाज बने हैं और उनकी समस्याओं का समाधान निकालने में हमेशा तत्पर रहते हैं। आमलोगों के लिए उनका दरबार हमेशा खुला रहता है।

मप्र और छत्तीसगढ़ एक होता तो मुख्यमंत्री होते अग्रवाल

सांसद बृजमोहन अग्रवाल मुख्यमंत्री पद के प्रमुख दावेदारों में स्थान रखते हैं। यदि आज मप्र और छत्तीसगढ़ एक होता तो अग्रवाल मुख्यमंत्री होते। क्योंकि उनकी मध्यप्रदेश की राजनीति में भी गहरी पैठ है। और यहां पर भी वे एक सर्वमान्य नेता के तौर पर देखे जाते हैं। यह उनकी काबिलियत ही है कि प्रदेश के अंदर और प्रदेश के बाहर उनको स्वीकार किया जाता है।

छत्तीसगढ़ की राजनीति में प्रभाव

बृजमोहन अग्रवाल का प्रभाव छत्तीसगढ़ की राजनीति में बहुत गहरा है। उनका कार्यकाल राज्य के सामाजिक-आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण रहा है। उन्होंने अपनी नीतियों के जरिए राज्य के आर्थिक विकास को गति दी और छत्तीसगढ़ को एक मजबूत राज्य बनाने की दिशा में काम किया। उनकी रणनीतियाँ हमेशा व्यावहारिक और दूरदर्शी रही हैं। उनका राजनीतिक जीवन एक प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने अपनी मेहनत, नेतृत्व क्षमता और राज्य के प्रति समर्पण से छत्तीसगढ़ की राजनीति में एक महत्वपूर्ण स्थान हासिल किया है। उनकी कार्यशैली और निष्ठा आज भी उन्हें छत्तीसगढ़ के लोगों के बीच एक सम्मानित नेता बनाती है। दूरदृष्टि और समर्पण के कारण वे छत्तीसगढ़ के सबसे प्रभावशाली नेताओं में गिने जाते हैं। उनकी नीतियां और योजनाएं राज्य के विकास में मील का पत्थर साबित हुई हैं। उन्होंने हमेशा राज्य के विकास को प्राथमिकता दी।

कृषि और ग्रामीण विकास में योगदान

बृजमोहन अग्रवाल के कार्यकाल में छत्तीसगढ़ के कृषि क्षेत्र में कई क्रांतिकारी बदलाव आए। छत्तीसगढ़ राज्य कृषि प्रधान राज्य है और यहां के किसानों का जीवन बहुत हद तक कृषि पर निर्भर है। बृजमोहन अग्रवाल ने राज्य में कृषि के विकास के लिए कई योजनाएं लागू कीं, जिनमें कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिए नवीनीकरण, सिंचाई सुविधाओं का विस्तार और नई तकनीकों को अपनाना शामिल था। उनके नेतृत्व में किसानों को बेहतर बीज, उर्वरक और सिंचाई सुविधाएं उपलब्ध कराई गईं। उन्होंने कृषि ऋण मुक्ति योजना को लागू किया, जिससे राज्य के लाखों किसानों को राहत मिली। इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे का सुधार, सड़कों का निर्माण और शहरीकरण की दिशा में काम करना। वहीं अग्रवाल ने पंचायती राज संस्थाओं को मजबूत करने के लिए कई प्रयास किए। उन्होंने स्थानीय प्रशासन और पंचायतों के कार्यों में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाने के लिए कई सुधार योजनाओं की शुरुआत की।

केंद्र और राज्य के संयुक्त प्रयासों से नक्सलमुक्त हो रहा प्रदेश

-शशि पांडे

जगत प्रवाह. रायपुर। लंबे समय तक नक्सलवाद से प्रभावित रहे बस्तर क्षेत्र में शांति स्थापित करने की दिशा में केंद्र और राज्य के संयुक्त प्रयासों ने असर दिखाया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह की रणनीति और संकल्प के साथ 31 मार्च 2026 तक नक्सलमुक्ति का लक्ष्य एक बड़े बदलाव का संकेत देता है। इससे विकास कार्यों को गति मिलने की उम्मीद बढ़ी है। विष्णु देव साय सरकार ने युवाओं के लिए पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया सुनिश्चित करने के उद्देश्य से छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग से जुड़े मामलों में जांच कराना सरकार के जवाबदेही वाले दृष्टिकोण को दर्शाता है। साथ ही, खेल गतिविधियों विशेषकर बस्तर व सरगुजा ओलंपिक जैसे आयोजनों के माध्यम से स्थानीय प्रतिभाओं को मंच प्रदान किया गया है। विगत वर्ष आयोजित 'सुशासन तिहार' को इस वर्ष भी 01 मई से 10 जून तक आयोजित किया जा रहा है। इसका उद्देश्य योजनाओं की जमीनी हकीकत को परखना, नागरिकों की समस्याओं का त्वरित समाधान करना और प्रशासन को सीधे जनता से जोड़ना है। राज्य सरकार का मानना है कि इस समन्वय से विकास योजनाओं को गति मिली है और इसका लाभ प्रदेश के लगभग तीन करोड़ नागरिकों तक पहुंच रहा है। छत्तीसगढ़ में बीते लगभग ढाई वर्षों में शासन की कार्यशैली को लेकर एक नई परिभाषा गढ़ने की कोशिश दिखाई देती है। विष्णु देव साय के नेतृत्व में राज्य सरकार ने सुशासन को केवल एक नारा नहीं, बल्कि जमीनी क्रियान्वयन का आधार बनाने की दिशा में कदम बढ़ाए हैं। प्रदेश की पहचान 'धान का कटोरा' के रूप में रही है, लेकिन इस पहचान को सम्मान देने का काम हालिया नीतिगत निर्णयों में स्पष्ट दिखता है। किसानों से प्रति एकड़ 21 क्विंटल धान की खरीदी और 3100 रुपये प्रति क्विंटल की दर तय करना केवल आर्थिक निर्णय नहीं, बल्कि अन्नदाताओं के आत्मविश्वास को मजबूत करने की पहल भी है। इसके साथ ही, तेंदूपत्ता संग्राहकों जिन्हें 'हरा सोना' से जुड़ा श्रमिक वर्ग कहा जाता है, के लिए पारिश्रमिक दर को 5500 रुपये करना और चरण पादुका वितरण जैसे निर्णयों ने आदिवासी क्षेत्रों में राहत पहुंचाई है। मुख्यमंत्री पद की शपथ लेते ही लगभग 18 लाख प्रधानमंत्री आवासों की स्वीकृति देना सरकार की प्राथमिकताओं को दर्शाता है। बेघर और जरूरतमंद परिवारों को छत उपलब्ध कराना सुशासन की पहली सीढ़ी के रूप में देखा गया। राज्य सरकार ने 70 लाख से अधिक विवाहित महिलाओं के खातों में प्रतिमाह 1000 रुपये की सहायता राशि देने की पहल की। यह राशि भले सीमित लगे, लेकिन ग्रामीण और जरूरतमंद परिवारों के लिए यह आर्थिक संबल का काम कर रही है। यह कदम महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक भागीदारी को बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

तुलाई में देरी से किसानों को बाजार में बेचना पड़ा गेंहू, कमलनाथ सरकार में समय पर हुई थी गेंहू की तुलाई

(पेज 1 का शेष)

सरकार को अच्छी तरह पता है कि छोटा किसान पहले ही बड़ी संख्या में बिचौलियों को गेंहू बेच चुका है। इस तरह सरकार ने छोटे और मझोले दोनों तरह के किसानों से कम से कम गेंहू खरीदने का तरीका निकाल लिया।

कमलनाथ सरकार के 18 माह में खुश थे किसान

कमलनाथ सरकार के 18 माह में प्रदेश के किसानों को परेशान नहीं होना पड़ा था। समय पर ही समर्थन मूल्य पर फसलों की तुलाई हो जाती थी। जिससे उनको अपनी उपार्जन का पूरा मूल्य मिल जाता था। वहीं मोहन सरकार में किसानों को अब काफी परेशान होना पड़ रहा है। इस साल तो गेंहू तुलाई में किसानों को बहुत नुकसान उठाना पड़ रहा है।

19 लाख किसानों का रजिस्ट्रेशन, 07 लाख किसानों को ही स्लॉट बुक

23 अप्रैल 2026 तक के सरकारी आंकड़े बताते हैं कि जहां मध्य प्रदेश के 19 लाख से अधिक किसानों ने एमएसपी पर गेंहू बेचने के लिये रजिस्ट्रेशन कराया है, वहीं 23 अप्रैल तक करीब 07 लाख किसानों के स्लॉट ही बुक हो सके हैं। रजिस्ट्रेशन और स्लॉट अलॉटमेंट के बीच यह भारी अंतर खुद ही सरकार के षड़यंत्र का खुलासा करता है। ऐसे में सरकार का यह कहना कि इस बार 100 लाख मीट्रिक टन गेंहू खरीद का लक्ष्य रखा गया है, एक दिखावा ही है। पिछले वर्ष ही मध्य प्रदेश में करीब 245 लाख मीट्रिक टन गेंहू का उत्पादन हुआ था। सरकार का खुद का दावा है कि इस बार गेंहू का उत्पादन पिछले वर्ष से ज्यादा हुआ है। ऐसे में सरकार ने प्रदेश के गेंहू के कुल उत्पादन का एक छोटा हिस्सा खरीदने का ही टारगेट रखा है। भाजपा को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि प्रदेश का किसान उसकी चालबाजी को बखूबी समझ रहा है। पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ का कहना है कि किसानों को चक्रव्यूह में उलझाने के बजाय अधिकतम किसानों से गेंहू की खरीद सुनिश्चित की जाए। स्लॉट बुकिंग और सैटेलाइट सर्वे की दिक्कत दूर की जाए। और वादे के मुताबिक किसानों को 2700 रुपये क्विंटल एमएसपी न देने के लिए भाजपा किसानों से माफी मांगे।

आखिर क्यों फैल हो रहा एमएसपी सिस्टम?

मध्यप्रदेश में गेंहू की बुवाई की प्रक्रिया और उत्पादन पर काफी निर्भरता है। हर साल लगभग 70-80 लाख मीट्रिक टन गेंहू की उपज होती है, जिसे सरकारी खरीद प्रणाली के तहत खरीदा जाता है। यह तुलाई प्रक्रिया राज्य के खाद्य आपूर्ति प्राधिकरण के द्वारा नियंत्रित होती है, जो सुनिश्चित करता है कि किसानों को निर्धारित समर्थन मूल्य (MSP) पर उनकी फसल का उचित मूल्य मिले। मध्यप्रदेश सरकार ने पिछले कुछ वर्षों में गेंहू तुलाई को सुगम बनाने के लिए कई योजनाओं की शुरुआत की है। ऑनलाइन पंजीकरण प्रणाली, आधुनिक गोदामों की स्थापना और तुलाई केंद्रों के नेटवर्क का विस्तार किया है। इसके साथ ही, सरकार ने किसानों की मदद के लिए मोबाइल ऐप और वेबसाइट जैसी डिजिटल सुविधाओं को भी विकसित किया है, जिससे वे अपने गेंहू की तुलाई की प्रक्रिया को ट्रैक कर सकते हैं। लेकिन तमाम प्रयासों के बावजूद सरकार किसानों की समस्याओं को हल नहीं कर पा रही है। सरकार द्वारा गेंहू तुलाई प्रक्रिया में सुधार के तमाम प्रयासों के बावजूद कुछ ऐसे पहलू हैं, जिनकी वजह से सरकार की मंशा पर सवाल उठते हैं।

तुलाई केन्द्रों में भारी भ्रष्टाचार

तुलाई केंद्रों पर कई बार राजनीतिक दबाव और भ्रष्टाचार की शिकायतें मिली हैं। कुछ किसानों का कहना है कि राजनीतिक प्रभाव वाले लोग तुलाई केंद्रों पर पहले अपनी फसल तौलवा लेते हैं, जिससे सामान्य किसानों को मौका नहीं मिलता। इसके अलावा, तुलाई केंद्रों पर 'घोटाले' की बातें भी आम हैं, जैसे कि वजन घटाने, कम गुणवत्ता का गेहूं मानने आदि। हाल ही में बीजेपी के विधायक विष्णु खत्री के वेयरहाउस का मामला काफी सुर्खियों में रहा। किसानों को समर्थन मूल्य (MSP) देने की सरकार की मंशा पर भी सवाल उठते हैं। कई किसानों का कहना है कि वे समर्थन मूल्य पर अपनी उपज नहीं बेच पाते, बल्कि मंडियों में बिचौलिए और व्यापारियों से कम दाम पर अपनी उपज बेचने के लिए मजबूर होते हैं। किसानों की परेशानियों का समाधान तभी संभव है जब सरकार अपनी नीतियों को जमीनी हकीकत के अनुरूप बनाकर उन्हें प्रभावी तरीके से लागू करे।

सम्पादकीय

बरगी डैम में हुए क्रूज हादसे का आखिर कौन है जिम्मेदार?

मध्यप्रदेश के जबलपुर स्थित बरगी डैम में हाल ही में हुए क्रूज हादसे ने एक बार फिर पर्यटन स्थलों पर सुरक्षा व्यवस्था और प्रशासनिक जवाबदेही पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। प्राकृतिक सौंदर्य और पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण इस जलाशय में विकसित की जा रही क्रूज और वाटर स्पोर्ट्स गतिविधियाँ पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बनी हुई थीं, लेकिन यह हादसा यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्या विकास की दौड़ में सुरक्षा मानकों की अनदेखी तो नहीं हो रही? यह प्रश्न केवल एक दुर्घटना तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके पीछे एक पूरी व्यवस्था की कार्यप्रणाली जुड़ी हुई दिखाई देती है। जब किसी पर्यटन स्थल को व्यावसायिक गतिविधियों के लिए विकसित किया जाता है, तो वहाँ सुरक्षा, प्रशिक्षण, आपातकालीन व्यवस्था और निगरानी तंत्र सबसे महत्वपूर्ण हो जाते हैं। दुर्भाग्यवश, कई बार इन बुनियादी पहलुओं को या तो औपचारिकता समझकर पूरा किया जाता है या फिर केवल कागजों तक सीमित रखा जाता है। बरगी डैम जैसे बड़े जलाशय में क्रूज संचालन के लिए स्पष्ट मानक संचालन प्रक्रिया (SOP) होना आवश्यक है। इसमें नावों की क्षमता, मौसम की स्थिति, लाइफ जैकेट की अनिवार्यता, प्रशिक्षित स्टाफ और नियमित निरीक्षण जैसी व्यवस्थाएँ शामिल होती हैं। सवाल यह उठता है कि क्या इन सभी मानकों का पूरी तरह पालन किया जा रहा था? यदि हाँ, तो फिर यह दुर्घटना कैसे हुई? और यदि नहीं, तो जिम्मेदारी तय करना और भी आवश्यक हो जाता है। इस पूरे मामले में प्रशासनिक तंत्र की भूमिका भी जांच के दायरे में आती है। स्थानीय प्रशासन, पर्यटन विभाग और संचालन करने वाली एजेंसी तीनों की साझा जिम्मेदारी बनती है कि पर्यटकों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाए। अक्सर देखा जाता है कि पर्यटन को बढ़ावा देने के नाम पर निजी संचालकों को अनुमति तो दे दी जाती है, लेकिन निगरानी व्यवस्था उतनी मजबूत नहीं होती जितनी होनी चाहिए। यही ढिलाई दुर्घटनाओं का कारण बनती है।

इसके अलावा, मौसम और जलस्तर जैसी प्राकृतिक परिस्थितियों का आकलन भी बेहद महत्वपूर्ण होता है। कई बार बिना पर्याप्त चेतावनी प्रणाली के नाव संचालन जारी रहता है, जो जोखिम को बढ़ा देता है। यह घटना इस बात का संकेत है कि तकनीकी निगरानी और रियल टाइम अलर्ट सिस्टम को और मजबूत करने की आवश्यकता है। एक और महत्वपूर्ण पहलू प्रशिक्षण का है। क्रूज संचालन में लगे कर्मचारियों और नाविकों को आपात स्थिति से निपटने के लिए प्रशिक्षित होना चाहिए। यदि किसी आपात स्थिति में त्वरित प्रतिक्रिया नहीं दी जाती, तो छोटी सी लापरवाही भी बड़े हादसे का रूप ले सकती है। इस घटना के बाद यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि जिम्मेदारी आखिर किसकी है क्या यह केवल संचालक की लापरवाही है, या फिर प्रशासनिक निगरानी की कमजोरी, या फिर नीति स्तर पर मौजूद खामियाँ? वास्तविकता यह है कि ऐसे हादसों के पीछे अक्सर एकल कारण नहीं होता, बल्कि कई स्तरों पर चूक होती है। जरूरत इस बात की है कि इस घटना को केवल एक दुर्घटना मानकर भुला न दिया जाए। इसके बजाय एक व्यापक सुरक्षा समीक्षा की जाए, जिम्मेदारी तय की जाए और भविष्य के लिए कठोर नियम लागू किए जाएं। पर्यटन विकास तभी सफल माना जा सकता है जब वह सुरक्षित, टिकाऊ और जिम्मेदार हो। बरगी डैम हादसा एक चेतावनी है कि विकास और सुरक्षा साथ-साथ चलने चाहिए। यदि सुरक्षा को प्राथमिकता नहीं दी गई, तो ऐसे हादसे केवल संख्या नहीं बढ़ाएंगे, बल्कि लोगों का विश्वास भी कमजोर करेंगे। अब समय है कि जवाबदेही तय हो और ऐसी व्यवस्था बने जिसमें पर्यटक न केवल आनंद लें, बल्कि पूरी सुरक्षा के साथ अपने अनुभव को यादगार बना सकें।

सियासी गहमागहमी

वेणुगोपाल का करीबी बताने से कांग्रेस में मची हलचल

एआईसीसी की बैठक में दिग्विजय सिंह द्वारा जीतू पटवारी को के. सी. वेणुगोपाल का खास बता देना, भारतीय राजनीति के उस पुराने थिएटर की याद दिलाता है जहाँ संवाद कम और संकेत ज्यादा बोले जाते हैं। कांग्रेस की बैठकों में वैसे भी रिश्तों की केमिस्ट्री अक्सर नीति से ज्यादा चर्चा में रहती है। ऐसे में किसी को खास घोषित कर देना एक तरह का राजनीतिक सर्टिफिकेट बन जाता है जिसका न फ्रेम होता है, न स्पष्ट परिभाषा, लेकिन असर पूरा होता है। अब यह खास होना पद का संकेत है, भरोसे का प्रमाण है या सिर्फ आंतरिक चुटकी यह रहस्य पार्टी की परंपरागत गोपनीयता नीति के अंतर्गत सुरक्षित रखा गया होगा। दूसरी ओर, ऐसे बयान संगठनात्मक एकता की बजाय अक्सर अंदरूनी हलचल की झलक दे जाते हैं। राजनीति में खास शब्द कभी-कभी उतना ही भारी होता है जितना सर्वसम्मति शब्द हल्का। और कांग्रेस जैसी पुरानी पार्टी में ऐसे विशेषणों की व्याख्या हर गुट अपने-अपने हिसाब से करता है जैसे कोई पुरानी कविता हो, जिसका अर्थ हर बार नया निकल आए।है।

नाराज पार्टी नेताओं को कैसे मनाएंगी भाजपा?

मध्यप्रदेश की राजनीति में सत्ता और संगठन का संतुलन साधना हमेशा से एक चुनौती रहा है। ऐसे में यह सवाल स्वाभाविक है कि आखिर नाराज पार्टी नेताओं को कैसे मनाएगी मध्यप्रदेश भाजपा? संगठन के भीतर असंतोष कोई नई बात नहीं है, लेकिन जब सत्ता मजबूत होती है, तो अपेक्षाएँ भी उसी अनुपात में बढ़ जाती हैं। मध्यप्रदेश भाजपा के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि हाल के राजनीतिक घटनाक्रमों के बाद उपेक्षित महसूस कर रहे नेताओं और कार्यकर्ताओं को फिर से मुख्यधारा में कैसे लाया जाए। कई बार टिकट वितरण, संगठनात्मक पदों और प्रशासनिक निर्णयों को लेकर असंतोष उभरता है, जो समय रहते संभाला न जाए तो अंदरूनी तनाव का रूप ले सकता है पार्टी के पास पारंपरिक रूप से दो रास्ते होते हैं एक संवाद और दूसरा संतुलन। संवाद के माध्यम से नाराज नेताओं को यह समझाने की कोशिश की जाती है कि संगठन सामूहिक निर्णय पर चलता है, जबकि संतुलन के तहत कुछ समायोजन और जिम्मेदारियों का पुनर्वितरण किया जाता है। लेकिन यह प्रक्रिया उतनी आसान नहीं होती, जितनी कागजों पर दिखती है। आखिरकार, भाजपा के लिए चुनौती केवल नाराज नेताओं को मनाने की नहीं, बल्कि संगठनात्मक अनुशासन और कार्यकर्ताओं के विश्वास को एक साथ बनाए रखने की है जो किसी भी मजबूत राजनीतिक दल की असली कसौटी होती है।

हफ्ते का कार्टून

ट्वीट-ट्वीट

कह दिया था - चुनाव के बाद महंगाई की गर्मी आएगी।
आज कमर्शियल गैस सिलेंडर 993 महंगा। एक ही दिन में सबसे बड़ी बढ़ोतरी। यह चुनावी बिल है।
फरवरी से अब तक: 1,380 की बढ़ोतरी - सिर्फ 3 महीनों में 81% का इजाफा।
चायवाला, ढाबा, होटल, बेकरी, हलवाई - हर किसी की रसोई पर बोझ बढ़ा। और इसका असर आपकी थाली पर भी पड़ेगा।

-राहुल गांधी
कांग्रेस नेता @RahulGandhi

भारत की सामाजिक राजनैतिक नब्ज का ज्ञान सबसे अधिक किसी व्यक्ति को है तो वो हमारे नेता @RahulGandhi जी को है। उन्होंने हमेशा समय रहते देश की जनता को आगाह किया है और हर बार वे सही साबित हुए है।

-कमलनाथ
प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष
@OfficeOfKNath

जगत प्रवाह

सोमवार, 4 मई 2026

राजवीरों की बात

राजनीतिक जीवन, अनुशासन और संगठनात्मक निष्ठा की एक मिसाल

समता पाठक/जगत प्रवाह

छत्तीसगढ़ की राजनीति में एक अनुभवी, सक्रिय और लंबे समय से जनप्रतिनिधि के रूप में स्थापित बृजमोहन अग्रवाल का जीवन परिचय राज्य की राजनीतिक यात्रा का महत्वपूर्ण अध्याय माना जाता है। वे भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता हैं और लंबे समय तक विधायक तथा मंत्री के रूप में छत्तीसगढ़ सरकार में विभिन्न महत्वपूर्ण विभागों का दायित्व संभाल चुके हैं। वर्तमान में वे रायपुर लोकसभा क्षेत्र से सांसद हैं और संसदीय राजनीति में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। बृजमोहन अग्रवाल का जन्म रायपुर, छत्तीसगढ़ में हुआ। उनका पारिवारिक वातावरण संस्कारों और सामाजिक मूल्यों से परिपूर्ण था, जिसने उनके व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रारंभिक शिक्षा रायपुर में ही प्राप्त करने के बाद उन्होंने उच्च शिक्षा भी यहीं से पूरी की। विद्यार्थी जीवन से ही उनमें सामाजिक कार्यों और जनसेवा की भावना विकसित होने लगी थी। यही रुचि आगे चलकर उन्हें सक्रिय राजनीति की ओर ले गई। राजनीतिक जीवन की शुरुआत उन्होंने भारतीय जनता पार्टी से की। संगठनात्मक कार्यों में उनकी सक्रियता और जनता के बीच उनकी मजबूत पकड़ ने उन्हें तेजी से पहचान दिलाई। वे रायपुर विधानसभा क्षेत्र से कई बार विधायक निर्वाचित हुए और लगातार जनता के विश्वास पर खरे उतरते रहे। उनकी कार्यशैली में संगठनात्मक क्षमता, निर्णय लेने की योग्यता और विकास कार्यों पर विशेष ध्यान प्रमुख रूप से दिखाई देता है। छत्तीसगढ़ राज्य के गठन के बाद उन्होंने राज्य की राजनीति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे राज्य सरकार में कैबिनेट मंत्री के रूप में विभिन्न विभागों जैसे नगरीय प्रशासन, संस्कृति, स्कूल शिक्षा, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व आदि के जिम्मेदार रहे। मंत्री के रूप में उनके कार्यकाल में शहरी विकास, आधारभूत संरचना, शिक्षा व्यवस्था और सांस्कृतिक संरक्षण के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण योजनाओं का क्रियान्वयन हुआ। उन्होंने विशेष रूप से नगरीय निकायों के विकास और शहरी सुविधाओं के विस्तार पर जोर दिया।

उनकी कार्यशैली की विशेषता यह रही कि वे जमीनी स्तर पर जनता से सीधे संवाद स्थापित करते रहे। वे नियमित रूप से अपने क्षेत्र का दौरा कर लोगों की समस्याएं सुनते और उनके समाधान के लिए त्वरित प्रयास करते रहे। यही कारण है कि उन्हें एक जनसंपर्क में दक्ष और सहज नेता के रूप में पहचाना जाता है। सांसद बनने के बाद उन्होंने संसदीय क्षेत्र की समस्याओं को राष्ट्रीय मंच पर उठाने का कार्य किया। बुनियादी सुविधाओं, सड़क, पानी, रेलवे और शहरी विकास से जुड़े मुद्दों पर वे लगातार सक्रिय रहते हैं। संसदीय बहसों और समितियों में उनकी भागीदारी भी उल्लेखनीय रही है।

बृजमोहन अग्रवाल का सामाजिक योगदान भी महत्वपूर्ण माना जाता है। वे शिक्षा, स्वास्थ्य और सांस्कृतिक गतिविधियों से जुड़े विभिन्न सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं। धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजनों में उनकी सहभागिता उन्हें जनता के और अधिक करीब लाती है। वे युवाओं को राजनीति और समाजसेवा से जुड़ने के लिए प्रेरित करते रहे हैं। उनका राजनीतिक जीवन अनुशासन, संगठनात्मक निष्ठा और निरंतर सक्रियता का उदाहरण माना जाता है। लंबे राजनीतिक अनुभव के साथ उन्होंने छत्तीसगढ़ की राजनीति में एक स्थायी पहचान बनाई है। वे ऐसे जनप्रतिनिधि के रूप में देखे जाते हैं जिन्होंने स्थानीय स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक अपनी भूमिका को प्रभावी ढंग से निभाया है। वर्तमान समय में भी बृजमोहन अग्रवाल संसद में सक्रिय रहते हुए अपने क्षेत्र और राज्य के विकास के लिए प्रयासरत हैं। उनका जीवन परिचय इस बात का उदाहरण है कि निरंतर जनसेवा, संगठन के प्रति निष्ठा और जनता से जुड़ाव किसी भी नेता को दीर्घकालिक राजनीतिक सफलता दिला सकता है।

1 मई मजदूर दिवस पर विशेष

श्रमिक क्यों आंदोलन की राह पर?

रघु ठाकुर
सामाजिक कार्यकर्ता, विचारक और समाजवादी नेता

अप्रैल माह के प्रथम सप्ताह में नोएडा में मजदूरों की एक बड़ी हलचल हुई। बढ़ती महंगाई से परेशान, वेतन वृद्धि की मांग और काम के घंटों व श्रमिक कानूनों को समुचित रूप से लागू न करने से पीड़ित मजदूर अचानक कारखानों के बाहर निकल आये। कुछ देर प्रशासनिक और कार्यालयों के अधिकारियों ने उन्हें आश्वासनों की लालीपाप देकर समझाने का प्रयास किया परंतु वह लालीपाप देर तक नही दे सके। अचानक मजदूर आक्रोशित हो गये और उन्होंने हिंसक रूप अख्तियार कर लिया। ये मजदूर किसी एक कारखाने के नहीं थे बल्कि नोएडा में फैली हुई कंपनियों या सभी कंपनियों के मजदूर थे। वह सड़कों पर निकल पड़े, कुछ वाहन उनके द्वारा जलाये गये ऐसा बताया जाता है और हाईवे को जाम कर दिया। स्वाभाविक रूप से योगी राज की पुलिस बड़े पैमाने पर वहां पहुंची और बल प्रयोग कर मजदूरों के जाम का हटाया। लगभग 350 मजदूर गिरफ्तार किये गये। 100 से अधिक के खिलाफ प्रतिबंधित धाराओं में कार्यवाही की गई। इसके बाद क्या होगा, अभी कहना कठिन है?

मजदूरों के इस आंदोलन की तार्किकता और औचित्य स्वयं सिद्ध है। इन कारखानों में मजदूरों को तीन खंडों में बाँटा गया-कुशल, अर्धकुशल और अकुशल। इसी आधार पर उनकी मासिक मजदूरी तय की गई। उप्र सरकार ने न्यूनतम मजदूरी 11313 रुपया और राजस्थान ने मात्र 7010 रुपया मासिक निर्धारित की है जबकि दिल्ली में न्यूनतम मजदूरी 19,046 रुपया और हरियाणा सरकार ने हाल ही में 9 अप्रैल 2026 को अकुशल मजदूरों का वेतन 11,274 से बढ़ाकर 15,220 रुपया किया है। याने नोएडा के मजदूर को 400 रुपये प्रतिदिन का मिल रहा हैं और वही काम करने वाले मजदूर को 585 रुपया रोज तथा दिल्ली के मजदूर को लगभग 630 रुपये रोज दिया जा रहा है। स्वाभाविक था कि इस विषमता के खिलाफ असंतोष होगा और पिछले दिनों जब अमेरिका-ईरान युद्ध के नाम पर गैस सिलेंडर, डीजल-पेट्रोल और यातायात की दरों में वृद्धि हुई तो मजदूरों के लिये उसे सहना असहनीय हो गया। अगर यह मान लिया जाये कि एक मजदूर के परिवार में मात्र 5 ही सदस्य हैं तो इसका मतलब है कि एक व्यक्ति के लिये प्रतिदिन मुश्किल से 70-80 रुपये मिल रहे हैं। इतने कम पैसे में किसी परिवार या व्यक्ति का गुजारा कठिन तो छोड़ो असंभव है। 11000 रुपये की आय में से लगभग 3 से 4 हजार रुपया तो किराया तथा बिजली-पानी में चले जाते हैं। औसतन 1000-1500 रुपया आने-जाने या वाहन खर्च में चले जाते हैं। अब शेष बचे 5-6 हजार रुपया में से श्रमिक का परिवार कैसे पेट भरे, कैसे बच्चों को पढ़ाये, कैसे इलाज करवाये, यह कल्पना करना भी कठिन है। मजदूरों की मांग थी कि उन्हें 20,000 रुपया प्रतिमाह दिया जाये तथा उनके काम के घंटे तय किये जायें। हालात यह है कि, मजदूरों को आने-जाने में कम से कम 1 घंटा लग जाता है और आठ घंटे की जगह 12-12 घंटे काम करना पड़ता है। इस कार्य का कोई ओवर टाइम नहीं मिलता। पहले यह नियम था कि अगर श्रमिक से 8 घंटे से अधिक काम लिया जाता था तो उन्हें अतिरिक्त काम करने का वेतन से दोगुनी राशि मिलती थी। परंतु पिछले दिनों अनेकों श्रमिकों के कानूनों को चार नये श्रमिक-कानूनों में सूचीबद्ध किया गया है उसमें मजदूरों के हितों के प्रावधान लगभग हटा दिये गये। एक प्रकार से मजदूरों को

उद्योगपति के बंधुआ मजदूरों में बदल दिया गया। कारखानों के पंजीयन के लिये जो पहले 10 मजदूरों की संख्या पर्याप्त होती थी अब उसको बढ़ाकर 20-40 और इससे भी अधिक कर दी गई और इसके परिणामस्वरूप बहुत सारे छोटे-छोटे उद्योग पंजीयन के नियम से बाहर हो गये और उन पर श्रम कानून लागू नहीं होते।

जो बैचेनी नोयडा के मजदूरों के सामने आई है वह केवल नोयडा की नहीं बल्कि देश के कई इलाकों की है। फरवरी माह में बिहार के बरौनी के तेल शोधक कारखाने में काम करने वाले मजदूरों ने भी काम करने के आठ घंटे की समय सीमा तय करने के लिये आंदोलन किया था जो कई दिन चला था। हालांकि वह देश की राजधानी से दूरस्थ इलाका था इसलिये मुख्य मीडिया ने उसे वह स्थान नहीं दिया जो दिया जाना चाहिये।

01 मई को मजदूर दिवस मनाया जाता है, उसकी शुरुआत ही शिकागो में मजदूर आंदोलन के कारण हुई थी वहां के मजदूरों ने जिनसे मालिक मनमर्जी काम कराते थे, मजदूरों ने 8 घंटे काम करने की समय सीमा तय करने की मांग की थी। शिकागो में गोलियां चली थीं और बड़ी संख्या में मजदूर शहीद हुये थे। उन्हीं की शहादत की याद में 1 मई को सारी दुनिया में मजदूर दिवस मनाया जाता है। परंतु बरौनी, नोएडा, ग्रेटर नोएडा और आसपास के कई इलाकों की लाचारियों और कठिनाईयों ने मजदूरों को 20 दिन पूर्व ही आंदोलन करने को मजबूर कर दिया। उप्र के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का बयान दुखद चिंताजनक और गुमराह करने वाला है। उन्होंने बयान देकर कहा है कि कुछ बाहर के लोग यहां आये थे, उन्होंने मजदूरों को भड़काया है। जबकि नोयडा और ग्रेटर नोयडा में जो काम करने वाले मजदूर हैं अधिकांश आसपास के इलाके के हैं और किसानों तथा मजदूरों के बेटे हैं। कुछ मीडिया रिपोर्टस के अनुसार इन आंदोलनकारी मजदूरों में मात्र 50 मजदूर बाहर के थे। योगी आदित्यनाथ को या तो उनके अधिकारी या पुलिस तथ्यपरक जानकारी नहीं दे रहे थे या फिर योगी आदित्यनाथ पूंजीपति हित साधने में उलझ चुके हैं। मजदूर, नोएडा के हों, आसपास के हों या बाहर के हों, यह कोई मुद्दा नहीं है बल्कि मुद्दा तो यह है कि एक मजदूर को कितनी मजदूरी मिलना चाहिए। 11000 रुपया या 13000 रुपया। क्या एक मजदूर परिवार के लिये यह पर्याप्त है? नोएडा के उद्योगपति औसतन माह में कितना रुपया कमाते हैं। नोएडा और ग्रेटर नोएडा दोनों उद्योग के नये केंद्र हैं, जहां हजारों की संख्या में उद्योगों की शाखायें हैं। अगर इनके आय की रिटर्न का अध्ययन किया जाए तो शायद ही कोई ऐसा अभागा उद्योगपति होगा जो दिन के करोड़ या दो करोड़ रुपया से कम कमाता हो। यह आर्थिक विषमता इस सीमा तक पहुंच चुकी है कि जो मजदूरों के लिये असहज पीड़ादायक है। मुख्यमंत्री भगवान राम को मानने वाले हैं ऐसा उनका कहना है और भगवान राम ने किस व्यवस्था की कल्पना की है, इसकी कल्पना योगी को करना चाहिये। तुलसी ने रामायण में लिखा है तुलसी ममता राम सौ, समता सब संसार्य याने राम की ममता ऐसी थी कि जो केवल अयोध्या को नहीं बल्कि सारे संसार को समान मानती थी परंतु योगी आदित्यनाथ की ममता विभाजित है, जो उद्योगपतियों के लिये तिजोड़ी भरने की छूट देती है और मजदूरों के लिये हम भूखे हैं यह कहने की भी अनुमति नहीं देती। तुलसी ने यह भी लिखा है कि मुखिया मुख सो चाहिऐ खान-पान कहुँ एक, पालइ पोषइ सकल अंग तुलसी सहित बिबेक्य याने मुखिया मुँह के समान होना चाहिये। मुख खाता है चबाता है परंतु उसे सभी अंगों में समान रूप से आवश्यकता के अनुसार वितरित कर देता है। नोएडा से उठी आवाज पुनः उठेगी। हरियाणा जहां भाजपा की सरकार है, वहां के मुख्यमंत्री श्री नायाब सिंह सैनी ने सच्चाई को समझकर अप्रैल के पहले सप्ताह में ही मजदूरों को न्यूनतम 15000 रुपया प्रतिमाह देने की घोषणा कर दी। कहने को दिल्ली और नोएडा अलग हैं परंतु एक अर्थ में नोएडा दिल्ली जैसा ही है। अगर योगी जी जमीनी सच्चाई को नहीं समझेंगे तो गलती करेंगे। मोदी और योगी के भाषणों से गरीब का पेट नहीं भरता बल्कि पेट की आग नकली उपदेशों से और तेज होती है।

घुसपैठ से मुक्ति के लिए बंगाल में बदलाव की लहर

प्रमोद भार्गव
वरिष्ठ पत्रकार

इस बार पश्चिम बंगाल में मतदाताओं ने जबरदस्त मतदान करके इतिहास रच दिया है। साथ ही अंतिम चरण के मतदान के बाद एग्जिट पोल ने बंगाल और असम में भाजपा की जीत तय कर दी है। बंगाल में तृणमूल को पराजय का सामना करना पड़ता है तो ममता बनर्जी के लिए यह न केवल बड़ा झटका होगा, बल्कि तृणमूल का अस्तित्व वामदलों की तरह रसातल में डूबता दिखाई देगा। दरअसल असम एवं बंगाल में सबसे बड़ा कोई मुद्दा रहा है तो वह घुसपैठ और इन राज्यों में बढ़ता इस्लामीकरण है। अनेक सीमांत जिलों में घुसपैठ ने दोनों राज्यों में जनसंख्यात्मक घनत्व को बिगाड़ दिया है। कई जिलों में मुस्लिमों की आबादी 90 से 95 फीसदी तक पहुंच गई है। इन बद्तर हुए हालातों के प्रति नरेंद्र मोदी और अमित षाह ने मतदाताओं को जागरुक किया। हिंदू संदेशखाली और आरजीकर में हुए महिला दुष्कर्मों के चलते ध्रुवीकृत हुए। भाजपा ने इन मुद्दों को भुनाने की दृश्टि से आरजीकर अस्पताल में दुष्कर्म व हत्या की शिकार हुई डॉक्टर की मां रत्ना देबनाथ को और संदेशखाली आंदोलन की चेहरा रहीं रेखा पात्र को उम्मीदवार बनाया था। इन महिलाओं की उम्मीदवारी से बंगाल की महिलाओं में संवेदना जगी और बदलाव की लहर बनाने में उनकी प्रमुख भागीदारी रही।

इन सब बिंदुओं के उभार ने बंगाल में कुल मतदान को 92.47 प्रतिशत तक पहुंचाकर लोकतंत्र की गरिमा को महिमामंडित करने का काम कर दिया। इसी का परिणाम है कि छह में से पांच एग्जिट पोल बंगाल में भाजपा को स्पष्ट बहुमत दे रहे हैं। ये पोल असम में दूसरी बार भाजपा को एकतरफा जीत का ऐलान कर रहे हैं। वहीं तमिलनाडु में द्रमुक की जीत लगभग तय है। केरल में कांग्रेस को हरी झंडी दिखाई है। पुडुचेरी में भाजपा को कांग्रेस से बहुत आगे बता दिया है। अर्थात पांच राज्यों में से तीन में भाजपा का डंका बजने जा रहा है। मतदान के दौरान निर्वाचन आयोग पूरी तरह चौकन्ना रहा। जहां से भी गड़बड़ी की खबर मिली, तुरंत एक्शन लिया। इस कारण लंबे समय तक अराजक तत्वों द्वारा मतदान रोकना संभव नहीं हो पाया। किसी भी झड़प को बड़े संघर्श का रूप लेने से पहले ही केंद्रीय बलों के जवान उसे नियंत्रित करने में सफल दिखे। पहली बार

अमल में लाई गई त्वरित प्रतिक्रिया (रिस्पांस) दल ने भी अपने दायित्व का पूर्ण रूप से दायित्व का पालन किया। बावजूद सच्चाई का पता चार मई को आने वाले परिणामों से ही चलेगा।

बंगाल के चुनावी इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है कि न तो बमों के धमाके हुए और न ही बंदूकों से गोलियां गरजीं। अतएव न रक्त बहा और न ही कोई मौत हुई। छिटपुट घटनाओं को छोड़ दें तो स्वतंत्र मतदान शांतिपूर्ण रहा। ऐसा 2.40 लाख सैन्य बलों की तैनाती के चलते संभव हुआ। इसीलिए बंगाल में पहली बार लगा कि सही मायनों में लोकतंत्र के इस पर्व में सभी समुदाय के लोग सद्भाव के साथ शामिल हुए हैं। बावजूद बौद्धिक पाखंडी बढ़े मतदान को ममता की वापसी बता रहे हैं। दरअसल बंगाल में इसके पहले हुए चुनावों में तृणमूल के कार्यकर्ता और अवैध घुसपैठिए अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए हिंदुओं को मतदान नहीं करने देते थे। इस बार सेना की कठोरता के चलते हिंदुओं ने ध्रुवीकृत होकर मतदान में भागीदारी की। इसलिए इस बार बंगाल में पिछली बार की तुलना में करीब 9 प्रतिशत अधिक वोट पड़े। ये वोट भाजपा के पक्ष में जाते दिख रहे हैं। निर्वाचन आयोग ने एसआईआर के जरिए भी घुसपैठ करके अवैध मतदाता बने करीब 92 लाख मतदाताओं को मत से वंचित कर दिया है। इनमें से बढ़ा प्रतिशत तृणमूल के समर्थकों का रहा है, क्योंकि ये लोग जानते थे कि भाजपा आई तो बंगाल से बाहर का रास्ता दिखाने के लिए मुस्तैद हो जाएगी। तृणमूल के कार्यकर्ता भाजपा और वामदलों के समर्थक मतदाताओं को इसलिए मतदान करने से रोकते थे, क्योंकि यदि ममता हारतीं हैं तो उनके निजी हित प्रभावित होंगे। ममता ने निश्ठावान अनुयायिओं को राषन की सरकारी दुकानों से लेकर नगरीय निकायों व ग्राम पंचायतों से मिलने वाले जायाज-नाजायाज लाभों से जोड़ा हुआ है। इसलिए उनके सामने आजीविका के संसाधनों को बचाए रखने के लिए जीवन-मरण का प्रष्न बना रहता है। भाजपा चूंकि वामदलों की तरह वामदलों की तरह अनुशासन कार्यकर्ताओं का राजनीतिक दल है। संघ के जमीनी स्वयंसेवकों का भी उसे सहयोग मिलता है। ये लोग अपने दल का अस्तित्व बनाए रखने की चिंता के चलते पार्टी के हितों की रक्षा करने को तत्पर रहते हैं।

ओपीनियन पोल, मसलन जनमत सर्वेक्षण जहां मतदान पूर्व मतदाता की मंषा टटोलने की कोशिश हैं, वहीं एग्जिट पोल, अर्थात सटीक सर्वेक्षण, मतदान पश्चात, मतदाता का निर्णय जानने की कोशिश है। ओपीनियन पोल बाईदवे शुल्क चुकाकर प्रायोजित ढंग से कराए जा सकते हैं, इसलिए क्योंकि इनके प्रकाशित व प्रसारित होने के बाद मतदाता के रुख को प्रभावित किया जा सकता है। किंतु एग्जिट पोल मतदान के चलते कराए जाते हैं, इसलिए ये वास्तविक परिणाम के पूर्व अनुमान माने जाते हैं। अतएव कोई राजनीतिक दल इन्हें अपनी इच्छानुसार कराने में रुचि नहीं लेता। मतदान के बड़े प्रतिषत को अब तक सत्तारूढ़ दल के खिलाफ व्यक्गित असंतुष्टि और व्यापक असंतोष के रूप में देखा जाता था, लेकिन मतदाता में आई बड़ी जागरूकता ने परिदृष्य को बदला है, इसलिए इसे केवल नकारात्मकता की तराजू पर तौलना बड़ी भूल होगी? सकारात्मक दृश्टि से देखने की भी जरूरत है। मध्यप्रदेश विधानसभा- 2023 के चुनाव में लाडली बहना योजना के चलते महिलाओं ने बढ़-चढ़कर मतदान किया था, जो भाजपा के पक्ष में स्पष्ट दिखाई दे रहा था। इसलिए मध्यप्रदेश में भाजपा चुनाव जीत पाई थी।

पारंपरिक नजरिए से मतदान में बड़ी रूचि को सामान्यतः एंटी इनकमबेंसी का संकेत, मसलन मौजूदा सरकार के विपरीत चली लहर माना जाता है। इसे प्रमाणित करने के लिए 1971, 1977 और 1980 के आम चुनाव में हुए ज्यादा मतदान के उदाहरण दिए जाते हैं। लेकिन यह धारणा पिछले कुछ चुनावों में बदली है। 2018 में छोड़ 2023, 2013, 2008 और 2003 में बड़े मतदान का लाभ सत्तारूढ़ होते हुए भी मध्यप्रदेश में भाजपा को मिलता रहा है। 2010 के चुनाव में बिहार में मतदान प्रतिशत बढ़कर 52 हो गया था, लेकिन नीतीश कुमार की ही वापिसी हुई। जबकि बंगाल में 2011 में ऐतिहासिक मतदान 84 फीसदी हुआ और मतदाताओं ने 34 साल पुरानी मार्क्सवादी कम्युनिश्ट पार्टी की बुद्धदेव भट्टाचार्य की सरकार को परास्त कर, ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस को जीत दिलाई थी। गोया, चुनाव विष्लेषकों और राजनीतिक दलों को अब किसी मुगालते में रहने की जरूरत नहीं है, मतदाता पारंपरिक जड़ता और प्रचलित समीकरण तोड़ने पर आमदा है।

बड़े मत प्रतिशत का सबसे अहम, सुखद व सकारात्मक पहलू है कि यह अनिवार्य मतदान की जरूरत की पूर्ति कर देता है। हालांकि फिलहाल हमारे देश में अनिवार्य मतदान की संवैधानिक बाध्यता नहीं है। निकट भविष्य में इस उम्मीद की पूरी होने की संभावना भी नहीं है। मेरी सोच के मुताबिक ज्यादा मतदान की जो बड़ी खूबी है, वह है कि अब अल्पसंख्यक व जतीय समूहों को वोट बैंक की लाचारगी से छुटकारा मिल रहा है। इससे कलांतर में राजनीतिक दलों को भी तुष्टिकरण की मजबूरी से मुक्ति मिलेगी। क्योंकि जब मतदान प्रतिशत 80 से करीब 93 प्रतिशत तक होने लगा है। अतएव अगले चुनावों में हम देखेंगे कि जाएगा तो जाति, भाषा या क्षेत्र विशेष से जुड़े मतदाताओं की अहमियत लगभग खत्म हो जाएगी। नतीजतन उनका संख्याबल जीत या हार की गारंटी नहीं रह जाएगा। लिहाजा सांप्रदायिक व जातीय आधार पर ध्रुवीकरण की राजनीति नगण्य हो जाएगी। एसआईआर के जरिए देश से घुसपैठिए बाहर कर दिए जाते हैं तो इस अवैध घुसपैठ से लाभ उठाने वाले नेताओं की भूमिका को भी जनता नकार देगी।

यह स्थिति मतदाता को धन व शराब के लालच से भी मुक्त कर देगी। क्योंकि कोई प्रत्याशी छोटे मतदाता समूहों को तो लालच का चुग्गा डालकर बरगला सकता है, लेकिन संख्यात्मक दृष्टि से बड़े समूहों को लुभाना मुश्किल होगा। जाहिर है, ऐसे हालात भविश्य में निर्मित होते हैं तो भारतीय राजनीति संविधान के उस सिद्धांत का पालन करने को मजबूर होगी, जो समाजिक न्याय और समान अवसर की वकालात करता है। बड़ा मतदान प्रतिशत ही ऐसा प्रमुख कारण है, जिसके चलते एग्जिट पोल इकतरफा नहीं रह गए हैं। क्योंकि इसके सर्वे के नमूने का प्रतिशत बहुत कम होता है। गोया, इस आधार पर बड़े मतदाता समूह की मंशा की पड़ताल करना और व्यावहरिक नतीजे पर पहुंचना बहुत कठिन काम है। वैसे भी अब कई सर्वे एजेंसियां क्षेत्रीय पत्रकारों से फोन पर बात करके नतीजों का अनुमान लगाने का तरीका अपना रही हैं। यह कार्यालय सर्वे की वैज्ञानिक प्रणाली को नकारती है। दरअसल क्षेत्रीय पत्रकार किसी न किसी दल या प्रत्याशी से प्रभावित रहते हैं और उसी प्रभाव के चलते वे अपनी राय व्यक्त कर देते हैं, जिसे तटस्थ नहीं कहा जा सकता है। किंतु इस बार के एग्जिट पोल अनुमान के निकट इसलिए खरे उतरेंगे, क्योंकि मतदाताओं का दलगत विभाजन पांचों राज्यों में स्पष्ट दिखाई दिया है।

पानी संकट पर महिलाओं ने किया अनोखा प्रदर्शन, नगर पालिका में मटके फोड़े

-नरेन्द्र दीक्षित

जगत प्रवाह. नर्मदापुरम। शहर में भीषण गर्मी के बीच पानी का संकट गहराता जा रहा है। आदर्श नगर और छोटी पहाड़िया क्षेत्र में नलों से पानी की आपूर्ति ठप हो गई, जिससे लोगों को पीने के पानी के लिए भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। बताया जा रहा है कि रॉ वाटर पाइपलाइन फूटने के कारण सप्लाई प्रभावित हुई है, जिसके चलते स्थिति और गंभीर हो गई है। इसी समस्या को लेकर स्थानीय लोगों, विशेषकर महिलाओं का गुस्सा सड़कों पर फूट पड़ा। नगर पालिका कार्यालय के सामने महिलाओं ने खाली मटके

फोड़कर अपना विरोध दर्ज कराया। यह प्रतीकात्मक प्रदर्शन उस गहरी नाराजगी और परेशानी को दर्शाता है, जो पानी की कमी के कारण लोगों को झेलनी पड़ रही है। प्रदर्शन के दौरान माहौल काफी आक्रोशपूर्ण रहा। महिलाओं ने नगर पालिका और जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ नारेबाजी की और चेतावनी दी कि यदि जल्द ही समस्या का समाधान नहीं हुआ, तो आंदोलन और तेज किया जाएगा। विरोध के दौरान एक अनोखा दृश्य भी देखने को मिला, जब महिलाएं नगर पालिका के गेट के सामने बैठकर भजन गाने लगीं।

स्थानीय लोगों का कहना है कि यह समस्या नई नहीं है। हर साल गर्मियों में पानी की किल्लत बढ़ जाती है, लेकिन स्थायी समाधान नहीं निकल पाता। इस बार हालात इतने खराब हैं कि कई इलाकों में पीने योग्य पानी तक उपलब्ध नहीं है, जिससे स्वास्थ्य संबंधी जोखिम भी बढ़ गए हैं। सबसे ज्यादा परेशानी महिलाओं को उठानी पड़ रही है, जिन्हें घर की रोजमर्रा की जरूरतों के लिए पानी जुटाने में काफी मशक्कत करनी पड़ रही है। उनका कहना है कि जो पानी मिल भी रहा है, वह पर्याप्त और स्वच्छ नहीं है। वहीं नगर पालिका की ओर से दावा किया जा रहा है कि पाइपलाइन की मरम्मत कर दी गई है और पानी की आपूर्ति बहाल कर दी गई है, लेकिन जमीनी स्तर पर लोग अब भी संकट झेल रहे हैं। लोग इसे केवल अस्थायी राहत मानते हुए स्थायी समाधान की मांग कर रहे हैं।

विकास की होड़ में पर्यावरण का संतुलनः अब या कभी नहीं!

पर्यावरण की फिक्र

डॉ. प्रशांत सिन्हा
पर्यावरणविद्

पर्यावरण और विकास एक दूसरे से परस्पर जुड़े हुए हैं। एक देश की आर्थिक तरक्की भी पर्यावरण को प्रभावित करती है। संपन्नता और विकास एक देश के उन्नति के लिए बहुत आवश्यक है किंतु इस विकास का आनंद लेने के लिए यह जरूरी है कि हम पर्यावरण संसाधनों के संरक्षण को विशेष महत्व दें। पर्यावरण और विकास का संतुलन बना कर के ही हम तरक्की का आनंद ले पाएंगे और आने वाली पीढ़ियों को लाभान्वित कर पाएंगे। आज पर्यावरण विनाश का सबसे बड़ा कारण तथाकथित विकास है जिसके पीछे इंसान अंधाधुन भागे चला जा रहा है। प्रकृति ने मानव को अन्य जीवों की अपेक्षा एक विलक्षण वस्तु "मस्तिष्क" प्रदान किया था जिसका इसने दुरुपयोग किया। उसने अपने जैविक और भौतिकवाद के चक्कर में पड़कर और स्वार्थ लोलप्तावश सम्पूर्ण प्रकृति और पर्यावरण संकलन का क्षत विक्षप्त कर दिया। अबाध रुप से बढ़ती जनसंख्या और उसी गति से समाप्त होती प्राकृतिक संपदाएं और संसाधन हमारे विनाश के सूचक हैं। विज्ञान की निरंतर भागदौड़ तथा मानव का भौतिकवाद प्राकृतिक संकलनों, संसाधनों को तीव्रता से नष्ट करता जा रहा है। किंतु जानते हुए भी इस पर हम सोच नही रहे हैं। हम दावे जितनी कर लें लेकिन असल में पर्यावरण की सूची में दुनिया के 180 देशों में भारत की स्थिति बहुत खराब है। पर्यावरण को लेकर वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की रिपोर्ट ने इसका खुलासा करते हुए कहा है कि देश में पर्यावरण सुधार के दावों के बावजूद हालत बेहद खराब है। विडंबना है कि डेनमार्क और ब्रिटेन जैसे देश 2050 तक ग्रीन हाउस गैसों में कमी लाने के लक्ष्य के साथ आगे बढ़ रहे हैं लेकिन अमेरिका, चीन, भारत और रूस जैसे देश बड़ी मात्रा में ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन कर रहे हैं।

यह सच है कि पृथ्वी तभी बचेगी जब पर्यावरण विकास का आधार बनेगा। जहां तक हरित संपदा का सवाल है उसके बारे में सरकार लगातार बढ़ोतरी का दावा करते नही थकती जबकि असलियत में इंसान और पेड़ों के अनुपात की वैश्विक सूची में भारत सबसे निचले पायदान पर है। हमारे देश में प्रति व्यक्ति पेड़ों की तादाद 28 ही है। 2020 में बीस फीसदी से ज्यादा पेड़ पौधों का दायरा सिमट गया। आई एस एफ आर के अनुसार हर साल देश में 22 लाख पेड़ काट दिए जाते हैं। जबकि कोरोना ने ऑक्सिजन और पेडों के महत्व का आभास सबको बखूबी करा दिया है। फिर भी सरकार विकास के नाम पर पेड़ों को निर्बाध कटाव पर आमदा है। उस स्थिति में जबकि देश में हरित संपदा की दृष्टि से केवल 3518 करोड़ ही पेड़ बचे हैं। क्षेत्रफल की दृष्टि से प्रति वर्ग किलोमीटर देश में कुल 11,109 पेड़ है। ग्लोबल रैंकिंग की दृष्टि से पेडों के लिहाज से भारत का स्थान दुनिया में 17वां, क्षेत्रफल के हिसाब से 125वां है। जबकि दुनिया के परिपेक्ष में देखें तो 69,834 करोड़ पेडों के साथ रूस पहले, 36,120 करोड़ पेडों के साथ कनाडा दूसरे, 33,316 करोड़ पेडों के साथ ब्राजील तीसरे, 22,286 करोड़ पेडों के साथ अमेरिका चौथे और 17,753 करोड़ पेडों के साथ चीन पांचवें पायदान पर है। समाज और सरकार को मिलकर वृक्षारोपण संस्कृति का विकास करना होगा, जिसके फायदे कई स्तरों पर समाज को मिलेंगे। इससे रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे। वहीं जंगलों का विस्तार प्राणवायु के साथ साथ आर्थिक समृद्धि का भी संबल बनेगा।

अगर उत्तराखंड को लें तो वहां देवदार के पेडों का कटान जारी है। बीते वर्षो में वहां विकास के नाम पर पर्यावरण की अनदेखी कर हरित संपदा, पानी और मिट्टी की अंधाधुंध बर्बादी की जा रही है। ऑल वेदर रोड के नाम पर वहां देवदार के सवा लाख पेड़ काट दिए गए है और कई पेडों के कटने की संभावना है। हालाकि सरकार ने भरोसा दिलाया है कि जितने पेड़ काटे जायेंगे उससे ज्यादा पेड़ लगाए जाएंगे। लेकिन ऐसा हो नही पाता। वह केवल रिकॉर्ड तक सीमित रहता है हकीकत में नही होता। यह सारा क्षेत्र राई, कैल, देवदार, धुनेर आदि शंकुधारी दुर्लभ वन प्रजातियों से भरपूर है। ग्लेशियरों के टूटने पर उसके दुष्परिणाम से बचाने में यही प्रजातियां प्रमुख भूमिका निभाती हैं। देवदार के पेड़ हिमालय और गंगा के सशक्त पट्टी हैं। ग्लेशियरों के तापमान नियंत्रित करने में इसका अहम योगदान है। विकास, जिसका लक्षय बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वस्तुओं व सेवाओं के उत्पादन को बढ़ाना है, पर्यावरण पर बहुत दवाब पड़ता है। विकास की प्रारंभिक अवस्थाओं में पर्यावरण संसाधनों की मांग पूर्ति से कम थी। अब विश्व के समक्ष पर्यावरण संसाधनों की बढ़ती मांग है लेकिन उनकी पूर्ति अत्यधिक उपयोग व दुरुपयोग की वजह से सीमित है। विकास का लक्षय उस प्रकार के विकास का संवर्धन है, जोकि पर्यावरण समस्याओं को कम करे और भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करने की क्षमता से समझौता किए बिना, वर्तमान पीढ़ी की जरूरतों को पूरा करें।

4 मई विश्व हास्य दिवस

हँसी की चिकित्सा से बनाएँ जीवन को रंगीन

आज की बात

प्रवीण कक्कड़
स्वतंत्र लेखक

हर साल मई के पहले रविवार को पूरा विश्व "विश्व हास्य दिवस" मनाता है। यह दिन सिर्फ मनोरंजन के लिए नहीं, बल्कि हँसी के माध्यम से मानवता को जोड़ने, तनाव मुक्त करने और आंतरिक आनंद को जगाने के लिए समर्पित है। 2025 में यह 4 मई को मनाया जाएगा। हँसी सिर्फ मुस्कान नहीं, बल्कि जीवन का अमृत है। कभी-कभी, यह हंसी सिर्फ एक भावना से कहीं बढ़कर हो जाती है- यह थेरेपी बन जाती है। जब दुख और निराशा हमें घेर लेते हैं, तो एक सच्ची हंसी संजीवनी बूटी का काम करती है, हमें दर्द से उबरने और नई उम्मीदों के साथ आगे बढ़ने की शक्ति देती है। तनाव कम करने के लिए तो लाफ्टर थेरेपी एक जानी-मानी तकनीक है।

हँसी थेरेपीः जब हँसना दवा बन जाए

कई बार हँसी थेरेपी का रूप ले लेती है। अस्पतालों में "लाफ्टर क्लब्स" बनाए जाते हैं, जहाँ मरीजों को हँसाकर उनके उपचार में तेजी लाई जाती है। शोध बताते हैं कि 15-20 मिनट की हँसी 2 घंटे की नींद के बराबर आराम देती है। कैंसर, डिप्रेशन और हृदय रोगों में भी हँसी थेरेपी कारगर साबित हुई है।

हँसीः प्रकृति का सर्वश्रेष्ठ उपहार

हँसी न सिर्फ मन को हल्का करती है, बल्कि योग से भी बढ़कर है। इसे "डायाफ्रामिक एक्सरसाइज" कहा जाता है, जो फेफड़ों को मजबूत करती है और पाचन तंत्र को दुरुस्त रखती है। वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि हँसने वाले लोगों की आयु अधिक होती है, क्योंकि यह रक्तचाप नियंत्रित करके हृदय को स्वस्थ रखती है।

हँसी का इतिहासः एक सकारात्मक क्रांति

1998 में डॉ. मदन कटारिया ने की थी, जो हास्य योग आंदोलन के संस्थापक हैं। आज 70 से अधिक देश इस दिन को उत्साह के साथ मनाते हैं, जो साबित करता है कि हँसी की भाषा सीमाओं से परे है। डॉ. कटारिया ने "फेशियल फीडबैक हाइपोथीसिस" से प्रेरणा लेकर यह सिद्ध किया कि कृत्रिम हँसी भी वास्तविक खुशी ला सकती है। उनका मानना था कि यदि व्यक्ति जबरदस्ती भी हँसता है, तो उसके मस्तिष्क को लगता है कि वह खुश है और वह एंडोर्फिन (खुशी के हार्मोन) छोड़ता है। इसी विज्ञान पर आधारित पहला विश्व हास्य दिवस मई, 1998 को मुंबई में मनाया गया, और आज यह एक वैश्विक आंदोलन बन चुका है।

हँसते रहिए, मुस्कुराते रहिए!

चार्ली चैप्लिन ने कहा था, "हँसी के बिना एक दिन, बर्बाद दिन है।" यह बात सच है, क्योंकि हँसीः तनाव कम करती है– कोर्टिसोल (तनाव हार्मोन) घटाती है। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है– श्वेत रक्त कोशिकाओं को सक्रिय करती है। दर्द निवारक है– एंडोर्फिन रिलीज करके प्राकृतिक पेनकिलर का काम करती है। सामाजिक रिश्ते मजबूत करती है– हँसी साझा करने से भावनात्मक जुड़ाव बढ़ता है।

खुलकर हँसने का रहस्य

हम अक्सर बड़े होकर "शिष्टाचार" के चक्कर में हँसना भूल जाते हैं। पर हँसने के लिए कोई मजाक ही क्यों हो? आपः

दर्पण के सामने मुस्कुराएँ – यह मस्तिष्क को खुशी का संकेत देता है।

बच्चों के साथ समय बिताएँ – वे बिना वजह हँसते हैं, सीखें उनसे।

कॉमेडी फिल्में देखें या जोक्स पढ़ें – हँसी को दिनचर्या का हिस्सा बनाएँ।

हास्य योग (लाफ्टर योगा) आज़माएँ – यह ध्यान और हँसी का अनूठा मिश्रण है।

हँसो, जीतो, जीवन को जी भर के जियो!

हँसी मुफ़्त की दवा है, जिसे हर कोई ले सकता है। यह न सिर्फ आपको स्वस्थ रखती है, बल्कि आपके आसपास के वातावरण को भी सकारात्मक बनाती है। तो इस विश्व हास्य दिवस पर प्रण लें– "रोज हँसूँगा, दूसरों को हँसाऊँगा, क्योंकि हँसी ही सच्ची जीवन-शैली है!"

विभिन्न विकास योजनाओं के लिए मुख्यमंत्री धामी ने दी 1252 करोड की स्वीकृति

-प्रमोद कुमार

जगत प्रवाह. देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कुम्भ मेला- 2027 की तैयारियों के साथ ही विभिन्न विकास योजनाओं के लिए1252 करोड़ का अनुमोदन प्रदान किया है। इन निर्णयों से आधारभूत ढांचे को सुदृढ़ करने, आपदा प्रबंधन को प्रभावी बनाने तथा पेयजल एवं बाढ़ सुरक्षा से संबंधित व्यवस्थाओं को सशक्त करने में महत्वपूर्ण सहयोग मिलेगा। मुख्यमंत्री धामी ने नियोजन विभाग द्वारा स्पेशल असिस्टेंट टू स्टेट फॉर कैपिटल इन्वेस्टमेंट के अन्तर्गत स्वीकृत कार्यों यथा ऋषिकेश गंगा कॉरिडोर परियोजना में त्रिवेणी घाट पुनरूद्धार हेतु 115 करोड़ तथा हरिद्वार गंगा कॉरिडॉर परियोजना के अन्तर्गत नोर्थ हर की पौडी डवलपमेंट हेतु 69.06 करोड स्वीकृत किये जाने का अनुमोदन प्रदान किया है। मुख्यमंत्री द्वारा जनपद टिहरी गढ़वाल में टिहरी झील के चारों और रिंग रोड (28.605 किमी) तक मोटर मार्ग निर्माण हेतु तहसील टिहरी/मदननेगी के अन्तर्गत अधिग्रहित 18 ग्रामों में अर्जित भूमि के प्रतिकर का भुगतान हेतु 25.13 करोड़ एवं जनपद टिहरी गढ़वाल के विधानसभा क्षेत्र प्रतापनगर/टिहरी के अन्तर्गत टिहरी झील के चारों और रिंग रोड निर्माण कार्य (पूर्व निर्मित मोटर मार्ग का चौडीकरण एवं सुधारीकरण) के वन भूमि हस्तान्तरण के एनपीवी भुगतान हेतु 10.94 करोड़ तथा अन्य विभागों के एनपीवी का भुगतान/भूमि अधिग्रहण हेतु प्राप्त कुल मांग 20 करोड़ अर्थात प्राविधानित धनराशि 100 करोड़ के सापेक्ष प्रथम किश्त में 56.07 करोड़ की धनराशि स्वीकृत किये जाने का अनुमोदन प्रदान किया है। मुख्यमंत्री द्वारा कुम्भ मेला- 2027 के अन्तर्गत हरिद्वार में पाइपलाइन बिछाने और वितरण के लिए पंपिंग जल आपूर्ति योजना के प्रतिस्थापन हेतु 06 करोड की योजना स्वीकृत किये जाने के साथ ही जनपद हरिद्वार के बहादराबाद विकासखण्ड में हरकी पौडी क्षेत्र, कनखल क्षेत्र एवं गौरीशंकर क्षेत्र में पूर्व निर्मित सड़कों की मरम्मत एवं सुधारीकरण कार्य हेतु 06 करोड तथा विद्युत विभाग को लाइन शिफ्टिंग किये जाने हेतु 99 लाख स्वीकृत किये जाने का अनुमोदन प्रदान किया गया है।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक विजया पाठक द्वारा जेयन आफसेट वर्क्स, पुल बोगदा भोपाल 462023 (मप्र) से मुद्रित तथा एफ-116/17, शिवाजी नगर, भोपाल (मप्र) से प्रकाशित। संपादक : विजया पाठक।
RNI-MPBIL/2011/39805 समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार। (सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भोपाल रहेगा।)